Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

वैदिक कालीन शिक्षा–पद्धति : एक विश्लेषण

राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
गणपति इंस्टीट्यूट ऑफ सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी
मोहन नगर, गाजियाबाद

डॉ० जगबीर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
डायट कड़कड़डूमा, दिल्ली

Article Info
Volume 4 Issue 6
Page Number: 50-56

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Accepted : 01 Dec 2021
Published : 25 Dec 2021

सारांश – वैदिक शिक्षा प्रणाली आधुनिक भारतीय शिक्षा–प्रणाली की नींव का पत्थर है। इसी शिक्षा–पद्धति के आधार पर आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। आज भी हमारी शिक्षा के मूल उद्देश्य वही हैं जो वैदिक काल में थे। वैदिक काल की भाँति हम आज भी समस्त ज्ञान–विज्ञान, कौशल और तकनीकी को शिक्षा की पाठ्यचर्या में सम्मिलित करते आ रहें हैं। आज भी हम शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच मधुर संबंध स्थापित करना चाहते हैं। वैदिक कालीन शिक्षा–प्रणाली उस समय के संसार की श्रेष्ठतम शिक्षा–प्रणाली थी। इसलिए आज के भारतीय समाज के स्वरूप में उसकी भावी आवश्यकताओं की दृष्टि से इस शिक्षा–पद्धति कुछ तत्त्व ग्रहणीय हैं। वैदिक कालीन शिक्षा–प्रणाली शहर के कोलाहल से दूर शांत, सुरम्य प्राकृतिक परिसर में चलने वाली, शांति, विश्वबंधुत्व और मानवता का पाठ पढ़ाने वाली, लोककल्याण को समर्पित, विद्यार्थियों में व्यावहारिक गुणों का समावेश करने वाली शिक्षा–पद्धति है। यह शिक्षा केवल आध्यात्मिकता पर आधारित न होकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देने वाली शिक्षा–पद्धति है। प्रस्तुत शोध आलेख में वैदिक कालीन शिक्षा– पद्धति का सामान्य परिचय देते हुए वैदिक कालीन शिक्षा–पद्धति की मुख्य विशेषताओं और उसके स्वरूप को समझाने का प्रयास किया गया है।

भारत की प्राचीन शिक्षा–व्यवस्था आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा मुक्ति एवं ज्ञान की प्रमुख साधन के रूप में थी। यह एक व्यक्ति के लिए नहीं बल्कि समाज में रहने वाले हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य थी। शिक्षा वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति के लिए ही नहीं बल्कि सभ्यता और संस्कृति के लिए भी

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अनिवार्य थी। भारतीयों ने शिक्षा का महत्त्व समझ लिया था, इसलिए भारत में सुदूर अतीत में शिक्षा की व्यवस्था बहुत ही अच्छे से की गई थी। सरकार के द्वारा उस समय शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी, फिर भी उस समय की शिक्षा का प्रचार–प्रसार व्यापक रूप से हुआ।

प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था को बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता था। उस समय भारत विश्व गुरु कहलाता था। उस समय की मान्यता थी कि जिस प्रकार अंधकार को दूर करने के लिए प्रकाश की जरूरत पड़ती है उसी प्रकार व्यक्ति के अज्ञानता को समाप्त करने के लिए शिक्षा की जरूरत पड़ती है। वैदिक शिक्षा व्यक्ति के जीवन का यथार्थ दर्शन कराती है, तथा इस योग्य बनाती है कि वह संसार के सभी मोह–माया को त्यागकर मोक्ष प्राप्त कर सके जो कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

संसार के हर प्राणी अपनी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा विषयों के माध्यम से जीवन के विभिन्न व्यवहार में अपने कामेन्द्रियों का प्रयोग करते थे। प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारम्भिक रूप वेदों में देखने को मिलता है। शिक्षा ही प्रथम सीढ़ी थी। इस युग की शिक्षा का उद्देश्य था आत्म साक्षात्कार करना और कराना। वैदिक शिक्षा पद्धति में ब्रह्मचर्य तप और योगासन से साक्षात्कार करने वाले ऋषि, विप्र, कवि, मुनि के लोग मनीषी आदि नाम प्रसिद्ध थे। उस समय के लोग मंत्रों को आकार में संग्रह करके वैदिक संहिताओं का व्यापक अध्ययन स्वाध्याय से श्रवण, मनन करते थे। विद्यालय गुरुकुल, आचार्यगृह, गुरु–गृह इत्यादि नामों से विदित थे।

वैदिक शिक्षा व्यवस्था में शिष्य गुरु के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करता था, और ब्रह्मचर्य, गुरु सेवा आदि विद्यार्थी पूरे मन से करता था। उस समय जो गुरु कहता था वही शिष्य को करना पड़ता था। गुरु के साथ अनुचर की तरह चलते और आज्ञा का पालन करते हुए वह हमेशा अनुशासन में रहते थे। गुरु के उपदेश पर चलते हुए वेद को ग्रहण करने वाले व्रतधारी ऋषि होते थे। वेद मंत्र याद होते थे। आचार्य मंत्रों को गाकर शिष्यों को सुनते थे और उसका अर्थ विस्तार से बताते थे ताकि शिष्य अच्छे से उन मंत्रों को कंठस्थ कर सके और समझ सके।

प्राचीन भारत में गुरु की महत्ता अत्यधिक थी। उनका बहुत आदर और सम्मान विद्यार्थी पूरे श्रद्धा से करते थे। उस समय के गुरु विद्वान, सदाचारी, निराभिमानी में पारंगत थे। किसी भी प्रकार का उनकों लोभ या लालच नहीं थी। वे हमेशा शिष्यों के कल्याण के लिए कार्य करते थे। उन्हें अपने पुत्रों से बढ़कर मानते और परिवार के सदस्य की तरह रखते थे। वैदिक काल की शिक्षा को प्राप्त करने के लिए गुरु का होना बहुत आवश्यक था बिना गुरु का कोई भी व्यक्ति ज्ञान या विद्या को प्राप्त नहीं कर सकता। गुरु, शिष्य का संबंध पिता–पुत्र की तरह था।

वैदिक शिक्षा में यज्ञों का अनुष्ठान विधि–विधान से होता था। वेद, शिक्षा, कल्प–व्याकरण, ज्योतिष और निरुक्त उनके पाठ्य होते थे। इस शिक्षा पद्धति में गुरुकुल से लेकर संस्कार, निःशुल्क शिक्षा, ब्रह्मचर्य का पालन, गुरु–शिष्य का संबंध वेदों का अध्ययन आदि उल्लेख मिलता है। अधिकतर शिक्षा मौखिक होती थी। गुरु का पाठ करना शिष्य द्वारा उस पाठ को याद करना आवश्यक होता था। उस समय विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता था। गुरु एक–एक विद्यार्थी को अलग–अलग पढ़ाता था और उसका पाठ करता और अशुद्धियों को दूर करता था। वर्तमान शिक्षा पद्धति में पहले की तरह गुरु–शिष्य का संबंध नहीं है ना तो निःशुल्क शिक्षा दिया जाता है। शिक्षा का बाजारीकरण कर दिया गया है। कोई किसी का आदर, सम्मान नहीं करना चाहता है। लेकिन वैदिक काल की शिक्षा में हर तरह से विद्यार्थी महारथ हासिल किए हुए थे।

वेदों का अध्ययन पूर्णिमा को शुरू होकर पौष पूर्णिमा को समाप्त होता था। शेष महीनों में पाठों का आवृत्ति एवं पुनरावृत्ति होती रहती थी। उस समय विद्यार्थी के अनुशासनहीनता का दंड देने की परिपाटी थी। पाठ्यक्रम को विस्तार से याद करने, अर्थ को विस्तार से गुरु को बताने का दंड दिया जाता था। जब तक मंत्र शिष्य को कंठस्थ नहीं हो जाते थे, तब तक गुरु शिष्य को माफ नहीं करता था। वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति में धीरे–धीरे पाठ्यक्रम का विस्तार होता गया, जिसमें वेदों, वेदांगों के साथ–साथ साहित्य, दर्शन, गणित, व्याकरण, चिकित्साशास्त्र इत्यादि विषयों का अध्ययन किया जाता था।

शोध आलेख का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य वैदिक कालीन शिक्षा–पद्धति की दिशा और दशा का सामान्य परिचय प्राप्त करते हुए इस शिक्षा–पद्धति की मुख्य विशेषताओं और स्वरूप का अध्ययन करना है।

वैदिक कालीन शिक्षा–पद्धति का स्वरूप

वास्तव में प्राचीन भारत में शिक्षा ऐसी ताकत थी जो मानव को विकसित एवं सशक्त बनाकर उसके समस्त गुणों का विकास करके उसे जीवन के लिए तैयार करती थी। इसलिए यह कहा भी गया कि उस मनुष्य को जो विभिन्न संस्कृति, भाषा, शास्त्रों और साहित्यों का ज्ञान रखता हो परन्तु उसकी अन्तंदृष्टि का जागरण नहीं हो पाया, तो वह विद्धान–विद्धान नहीं। भारत में 2500 ई0पू0 से 500 ई0पू0 तक वेदों का वर्चस्व रहा। इतिहासकार इस काल को वैदिक काल कहते है। वैदिक काल में हमारे देश में एक समृद्ध शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। इस शिक्षा प्रणाली को **वैदिक शिक्षा पद्धति** कहते हैं। वैदिक शिक्षा पद्धति इसलिए की इसका विकास वैदिक काल में हुआ और यह वैदिक धर्म एवं दर्शन पर आधारित थी।

वैदिक काल को भी भिन्न–भिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न उपकालों में विभाजित किया है शिक्षा की दृष्टि से उसे दो उपकालों में विभाजित किया जाता है। **प्रारंभिक वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल।** उत्तर वैदिक काल में शिक्षा पर ब्रह्मणों का एक छात्र अधिकार हो गया था। इसलिए कुछ विद्वान उत्तर वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाी को **ब्रह्मणीय शिक्षा पद्धति** भी कहते है क्योंकि यह शिक्षा प्रणाली हिन्दुओं द्वारा विकसित हुई थी इसलिए कुछ विद्वान इन दोनों को **हिन्दू शिक्षा पद्धति** भी कहते है, हमारी दृष्टि से इन्हें वैदिक शिक्षा प्रणाली कहना अधिक उपयुक्त है और वह इसलिए की 2000 वर्ष लम्बे इस वैदिक काल में शिक्षा प्रणाली में मूलभूत समानता रही थी। केवल ज्ञान में विकास के साथ–साथ इसकी पाठ्यचार्य और शिक्षण विधियों में विकास हुआ था। वैदिक शिक्षा पद्धति की विशेषताएं या स्वरूप इस प्रकार से है :–

वैदिक काल में विद्यारम्भ संस्कार

यह संस्कार उस समय होता था जब बालक प्राथमिक शिक्षा आरम्भ करता था। इस संस्कार के समय बालक को अक्षर ज्ञान कराया जाता था। बालक पहले सरस्वती, विनायक और अपने परिवार के देवताओं की उपासना करता था। उसके बाद गुरु उससे वर्णमाला के अक्षरों को लिखवाता था। **डॉ ए0एस0 अल्तेकर के अनुसारः** विघारम्भ संस्कार, उपनयन संस्कार के अनेक वर्षो बाद उस समय आरम्भ हुआ जब वैदिक संस्कृत, जनसाधारण की बोलचाल की भाषा नहीं रह गई थी। इस संस्कार के विषय में **डॉ0 वेद मित्र** ने लिखा है – ''यह संस्कार पांच वर्ष की आयु में होता था और साधारणतः सब जातियों के बालकों के लिए था।''

वैदिक काल में उपनयन संस्कार

यह संस्कार उस समय होता था जब बालक गुरू के संरक्षण में वैदिक शिक्षा आरम्भ करता था। **'उपनयन' का शाब्दिक अर्थ है – ''पास ले जाना''**। दूसरे शब्दों में बालक को वैदिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरू के पास के पास ले जाया जाता था। गुरू बालक को पहले **''सावित्री मंत्र'' अर्थात ''गायत्री मंत्र''** का उपदेश देता था और उसके बाद उसे शिक्षा देना आरम्भ करता था।

समावर्तन का शाब्दिक अर्थ है–**''घर लौटना''**। यह संस्कार लगभग 25 वर्ष की आयु में होता था, जब छात्र गुरू गृह से लौटकर अपने घर जाता था और ब्रह्मचर्य आश्रम का परित्याग करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था। जिस दिन यह संस्कार होता था, उस दिन दोपहर के समय छात्र स्नान करके और नये वस्त्र धारण करके गुरू के समक्ष उपस्थित होता था। गुरू पहले उसे मधुपर्क देता था और आधुनिक युग के दीक्षान्त भाषण के रूप में उसे **''समावर्तन उपदेश''** देता था। इस उपदेश का कुछ अंश इस प्रकार है– शिष्य सर्वदा सत्य बोलना। अपने कर्तव्य का पालन करना। स्वाध्याय में प्रमाद मत करना जो अच्छे कार्य हमने किये है, गुरू उनका अनुकरण करना, श्रद्धा से दान देना। तुम्हे हमारा यही आदेश है। यही उपदेश है।

वैदिक काल में गुरूकुल व्यवस्था

प्राचीन भारतीय शिक्षा की एक मुख्य विशेषता गुरूकुल प्रणाली थी। गुरूकुल किसी सुन्दर प्राकृतिक स्थान में, साधारणतः किसी ग्राम नगर के निकट होते थे। ताकि छात्रों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकें और उन्हें भिक्षाटन की सुविधा रहे। छात्र अपने गुरू के पास उसके कुल के सदस्य के रूप में रहकर ज्ञान का अर्जन करते थे और उससे वास्तविक जीवन की शिक्षा प्राप्त करते थे। दो गुरू के उच्च विचारों और आदर्शो को अनुकरण करके अपने श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करते थे।

वैदिक काल में अध्ययन की अवधि

प्राचीन काल में अध्ययन की अवधि आमतौर पर 12 वर्ष थी। इस अवधि में छात्र केवल एक वेद था अध्ययन कर सकते थें। यदि वे एक से अधिक वेदों का अध्ययन करना चाहते थे, तो उनको प्रत्येक वेद के लिए 12 वर्ष अध्ययन करना पड़ता था। 12, 24, 36, और 48 वर्ष की आयु तक अध्ययन करने वाले छात्र क्रमशः स्नातक, बसु, रूद्र और आदित्य कहलाते थे। साहित्य और अर्थशास्त्र के छात्रों के अध्ययन की अवधि 10 वर्ष की थी।

वैदिक काल में शिक्षा की प्रशासनिक एंव वित्त–व्यवस्था

1. निःशुल्क शिक्षा– वैदिक काल में शिक्षा पूर्ण रूप से निःशुल्क प्रदान की जाती थी। शिष्यों के रहने तथा खाने–पीने की सारी व्यवस्था गुरु स्वयं करते थे।

2. राज्य के नियंत्रण से मुक्त– वैदिक काल में शिक्षा–व्यवस्था पर पूर्णरूप से गुरुओं का ही व्यक्तिगत नियंत्रण होता था। वैदिक काल में शिक्षा पर राज्य का नियंत्रण नहीं होता था, क्योंकि शिक्षा–व्यवस्था करना राज्य का उत्तरदायित्व नहीं होता था।

3. आय के स्रोत– वैदिक काल में गुरुकुलों को राज्य की तरफ से कोई निश्चित अनुदान प्राप्त नहीं होता था बल्कि राजा या समाज के धनिक लोग गुरुकुलों को स्वेच्छा से भूमि, वस्त्र, अन्न, पशु, पात्र इत्यादि

वस्तुएँ भेंट–स्वरूप प्रदान करते थे। अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिष्य प्रतिदिन समाज से भिक्षा माँग कर लाते थे। इसके अतिरिक्त गुरुकुलों को गुरु दक्षिणा के माध्यम से भी आय प्राप्त होती थी।

वैदिक काल में शिक्षण का समय

शिक्षण के समय विषय में पर्याप्त जानकारियां उपलब्ध नहीं है। चूंकि वैदिक काल में मुद्रणालय, कागज एवं सस्ती पुस्तकें नहीं थी। अतः स्वभाविक निष्कर्ष यही निकलता है कि पठन–पाठन का सब कार्य आचार्य की देख–रेख में होता था। सम्भवः शिक्षण का कार्य प्रातकाल से दोपहर तक और फिर कुछ विश्राम तथ भोजनादि के उपरन्त सायकाल तक चलता था। प्राचीन ढंग की संस्कृत पाठशालाएं कुछ समय पूर्व तक इसी प्रकार के कार्यक्रम का अनुसरण करती थी।

वैदिक काल में शिक्षण की विधि

प्राचीन काल में शिक्षण की विधि–प्रवचन और व्याखान के रूप में मौखिक थी और श्रवण, मनन, चिन्तन, स्वाध्याय और पुनरावृत्ति उसके मुख्य अंग थें। छात्र गुरू के मुख से वेद ग्रन्थों को सुनते थे और उसके उच्चारण को सुनकर पीछे–पीछे उच्चारण करते थे। छात्रों की शंकाओं का समाधान करने के लिए प्रश्नोत्तर–विधि, वाद–विवाद विधि और शास्त्रार्थ का प्रयोग होता था।

वैदिक काल में कक्षा नायकीय पद्धति

शिक्षा पद्धति में गुरू प्रत्येग छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देता था। कभी–कभी गुरू के पास विद्या अर्जन के लिए अधिक छात्र आ जाते थें या फिर कभी गुरू को आवश्यक कार्य से कहीं बाहर जाना होता था तो कक्षा के ज्येष्ठ और श्रेष्ठ छात्र शिक्षण कार्य किया करते है। इससे दो लाभ होते थे पहला गुरू की अनुपस्थिति में शिक्षण कार्य चलता रहता था तथा दूसरा कक्षा नायक कुछ समय के बाद शिक्षण कार्य में दक्ष हो जाते थे।

वैदिक काल में गुरू–शिष्य सम्बन्ध

वैदिक काल में गुरू–शिष्य सम्बन्ध बड़े ही घनिष्ठ थे। गुरू के शिष्य के प्रति तथा शिष्य के गुरू के प्रति पारस्परिक कुछ कर्तव्य होते थे यथा –

शिक्षक के प्रति छात्र के कर्तव्य :–

छात्र अपने गुरू का स्थान माता–पिता तथा देवता से कम नहीं समझते थे। उनका हृदय से सम्मान करते थे। उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करते थे। सुबह उठकर उनका अभिवादन करके नीचे बैठकर पाठ पढ़ते थे। छात्र–गुरु के लिए दांतुन, स्नान के लिए पानी, तथा गुरूकुल के अन्य कार्यो में उनकी मद्द करते थे।

छात्रों के प्रति शिक्षक के कर्तव्य :–

वैदिक काल में गुरू, छात्र का पिता माना जाता था शिक्षक छात्र को ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ छात्रों का शारीरिक मानसिक और अध्यात्मिक विकास करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता था। वह छात्रों का चरित्र निर्माण, भोजन एवं वस्त्रों का प्रबन्ध करता था। यदि कोई छात्र बीमार हो जाता था तो वह उसकी सेवा तथा औषधि की व्यवस्था करता था।

वैदिक काल में दण्ड व्यवस्था

प्राचीन शिक्षा पद्धति में दण्ड के विधान पर सभी शिक्षाशास्त्री एक मत नहीं हैं। दण्ड, उपवास, समझाना तथा उपदेश के रूप में विद्यमान था। उदाहरणार्थ, आपस्तम्ब ने लिखा है कि गुरू छात्रों से उपवास करवा सकता था और उसे अपने पास से दूर भेज देता था। इसके विपरीत मनु का कथन है कि गुरू, रज्जु या पतली छड़ी से छात्र को शारीरिक दण्ड दे सकता था जो कि कठोर नहीं होता था।

वैदिक काल में शिक्षा के मुख्य केंद्र

वैदिक काल में प्राथमिक शिक्षा घरों में तथा उच्च शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुलों में होती थी। ये गुरुकुल वैदिक काल में प्रायः नगरों से दूर होते थे परंतु उत्तर–वैदिक काल में ये बड़े–बड़े नगरों तथा तीर्थ स्थानों पर स्थापित होने लगे। उस काल में तीर्थ स्थान धर्म–प्रचार के केंद्र होने के साथ–साथ उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में भी विकसित हुए। उस समय शिक्षा के प्रमुख केंद्र तक्षशिला, पाटलिपुत्र, मिथिला, धार, कन्नौज, नासिक, कांची व कर्नाटक थे।

निष्कर्ष

उपरोक्त तर्कों के आधार पर हम वह सकते है कि वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति हमारे देश में शिक्षा की अति सुन्दर व्यवस्था थी। शिक्षा का कर्त्तव्य व्यक्ति का बहुमुखी विकास करना था। शिक्षा मानव के व्यक्तित्व का निर्माण, उसकी मानसिक शक्तियों का विकास, उसके जीवन के अर्थ तथा महत्व की व्याख्या और उसे इहलोक से परलोक दोनों में आत्मिक उत्थान करने में सहायता देती थी।

वैदिक शिक्षा–प्रणाली आधुनिक भारतीय शिक्षा–प्रणाली का नींव का पत्थर है। उसी के आधार पर आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ है। सच बात तो यह है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली हमारी संस्कृति पर आधारित थी और संस्कृति से हम अलग हो नहीं सकते। आज भी हमारी शिक्षा के उद्देश्य मूल रूप से वही हैं जो वैदिक काल में थे। वैदिक काल की भाँति हम आज भी समस्त ज्ञान–विज्ञान, कौशल और तकनीकी शिक्षा को पाठ्यचर्या में सम्मिलित करते हैं। आज भी हम शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच मधुर संबंध स्थापित करना चाहते हैं और आधुनिक काल की शिक्षा प्रणाली और वैदिक शिक्षा प्रणाली में जो अंतर है वह तो विकास के क्रम में होना स्वाभाविक ही था।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली उस समय की संसार की श्रेष्ठतम शिक्षा प्रणाली थी, परंतु आज के भारतीय समाज के स्वरूप और उसकी भावी आवश्यकताओं की दृ ष्टि से उसके कुछ तत्त्व ग्रहणीय हैं और कुछ तत्त्व त्याज्य हैं। हमें वैदिक कालीन शिक्षा के ग्रहणीय तत्त्वों को ग्रहण कर अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ0 वैदिक, राधेश्याम सिंह, भारत समाज, संस्कृति एवं साहित्य विश्व भारती पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।
2. सिंह, डॉ. वी0 बी0 सिंह, पाहुजा, सुधा, भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, मेरठ, आर लाल बुक डिपो, संस्करण–2010

3. गुरुकुल शिक्षा का महत्त्व और प्रासंगिकता
http://www.divyamanavmission.org/index.php/current&affairs/254-siksha
4. डॉ0 भटनागर, ए0 बी0 तथा भटनागर सुरेश, भारतीय शिक्षा प्रणालीः इतिहास, विकास एवं तात्कालीन समस्याएं, आर0 लाल0 बुक डिपों, मेरठ, संस्करण–2014
5. प्रो0 लाल, रमन बिहारी तथा डॉ0 कान्त कृष्ण, समकालीन भारत और शिक्षा, आर0 लाल0 बुक डिपों, मेरठ, संस्करण–2016
6. मिश्र, डॉ0 भास्कर, वैदिक शिक्षा पद्धति, महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन, संस्करण–2001
7. अग्रवाल, जे0 सी0, भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास, आगरा, आर0 एस0 ए0 इंटरनेशनल, तृतीय संस्करण–2015
8. मिश्रा, राजकुमार, भारतीय शिक्षा एवं सामाजिक समस्याएं, श्री कविता प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान, संस्करण–2006
9. डॉ0 शुक्ला, सी0 एस0, भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, संस्करण–2009
10. मदान पूनम, भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन, laLdj.k&2014@15
11. डॉ0 भास्कर, मिश्र वैदिक शिक्षा पद्धति, प्रकाशक– महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद–विद्या
12. प्रतिष्ठान, उज्जैन।
13. शर्मा एवं लाल, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, आर0 लाल0 बुक डिपों, मेरठ, संस्करण–2010
14. डा0 गुप्ता अरूण, समकालीन भारत एवं शिक्षा, ठाकुर पब्लिकेशन, संस्कारण–2015/16
15. https://www.gkexams.com/ask/62897-Vaidik-Kaal-Me-Shiksha
16. डॉ0 सिंह वी0 पी0, भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, आर0लाल0 बुक डिपों मेरठ, संस्करण–2013
17. त्यागी, गुरसरन दास, भारत में शिक्षा का विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, संस्करण–2010/11
18. डॉ0 चौबे, एस0 पी0, भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, इंटरनेशनल पब्लिकेशन, हाऊस, मेरठ, संस्करण–2011
19. पाठक, पी0 डी0 भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन, संस्कारण–2014/15
20. लुणिया, बी0 एन0, भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, प्रकाशक लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।